उच्च प्राथमिक स्तर पर
हिन्दी भाषा (तीसरी भाषा के रूप में) सीखने की संप्राप्ति

बच्चे घर-परिवार एवं परिवेश से प्राप्त बोलचाल की भाषा के अनुभवों को लेकर ही विद्यालय आते हैं। पाँचवीं कक्षा तक विद्यालय में वे मातृभाषा के ज्ञान से काफी समृद्ध हो जाते हैं। असम प्रान्त के हिन्दीतर माध्यमों (अंग्रेजी माध्यमों के विद्यालयों को छोड़कर) के बिद्यालयों के बच्चों को छठी कक्षा से मातृभाषा के साथ-साथ अनिवार्य रूप में हिन्दी भाषा भी (तीसरी भाषा के रूप में) एक विषय के रूप में सीखना पड़ता है। इस समय तक बच्चे मातृभाषा के श□दों के अर्थ और उनके प्रभाव से परिचित होता है। इनसे मिलते-जुलते हिन्दी की श□दावली से भी वे कुछ परिचित होते ही हैं। हिन्दी भाषा के लिपिबद्ध चिह्न और उनसे जुड़ी ध्वनियाँ बच्चों के लिए अमूर्त हैं, इसलिए पढ़ने का प्रारंभ अर्थ से ही होना और किसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए होना अपेक्षित है। यह उद्देश्य कहानी सुनकर, पढ़कर आनंद लेने के रूप में भी हो सकता है। धीरे-धीरे बच्चों में भाषा की लिपि से परिचित होकर अपने परिवेश में उपल□ध लिखित भाषा को भी पढ़ने-समझने की जिज्ञासा उत्पन्न होती है। भाषा-शिक्षण की इस प्रक्रिया के मूल में बच्चों के बारे में यह अवधारणा है कि बच्चे दुनिया के बारे में अपनी समझ और ज्ञान का निर्माण स्वयं करते हैं। यह निर्माण किसी के सिखाए जाने या ज़ोर-ज़बरदस्ती से नहीं बल्कि बच्चों के स्वयं के अनुभवों और आवश्यकताओं से होता है। इसलिए बच्चों को ऐसा वातावरण मिलना ज़रूरी है जहाँ वे बिना रोक-टोक के अपनी उत्सुकता के अनुसार अपने परिवेश की खोज-बीन कर सकें।

यही अवधारणा बच्चों के भाषिक कौशलों पर भी लागू होती है। विद्यालय में आने पर बच्चे प्राय: स्वयं को बेझिझक अभिव्यक्त करने में असमर्थ पाते हैं। □योंकि भाषा के जिस में वे सहजता से अपनी राय, अनुभव, भावनाएँ आदि व्यक्त करना चाहते हैं वह विद्यालय में प्राय: स्वीकृत नहीं होतीं। भाषा-शिक्षण को बहुभाषी संदर्भ में रखकर देखने की आवश्यकता है। कक्षा में बच्चे अलग-अलग भाषायी-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आते हैं। कक्षा में इनकी भाषाओं का स्वागत किया जाना चाहिए और उनमें बच्चों से सहज अभिव्यक्ति क्षमता का उपयोग करते हुए हिन्दी पढ़ाई जानी चाहिए। शिक्षक बहुभाषिकता की मह□ा को समझकर कक्षा में उसका उपयोग करे, तभी वह बच्चों को अपने परिवेश में स्थित सांस्कृतिक और भाषिक विविधता के प्रति संवेदनशील बना सकता है। आज बहुभाषिकता को बच्चे के व्यक्तित्व विकास के लिए संसाधन के रूप में विकसित करने की आवश्यकता है।

छठी से आठवीं कक्षा के बच्चे किशोरावस्था में कदम रख रहे होते हैं। यह दौर मन, मानस और शारीरिक परिवर्तन की दृष्टि से संवेदनशील होता है। इस नए संधि काल में विद्यालय, कक्षा और शिक्षक की सकारात्मक भूमिका विद्यार्थियों की ऊर्जा और जिज्ञासा को सार्थक स्वस्थ दिशा दे सकती है ताकि मननशील और संवेदनशील व्यक्ति के रूप में उनका विकास हो सके। इसके लिए ज़रूरी है कि वे कक्षा के साथ भावनात्मक और बौद्धिक जुड़ाव महसूस कर सकें। सौंदर्यबोध, साहित्यबोध और सामाजिक-राजनीतिक बोध के विकास की दृष्टि से स्कूली जीवन का यह चरण अत्यंत महत्वपूर्ण है, €योंकि इस चरण में कई किस्म के बोध और दृष्टियों के अंकुर फूटते हैं। चाहे भाषायी सौंदर्य हो या परिवेशगत, कोई चीज़

सुंदर है तो □यों है ? यदि कोई वस्तु, रचना, फिल्म आदि अच्छी है तो वे कौन-से बिन्दु हैं जो उसे अच्छा बनाते हैं, उनके बारे में स्पष्ट सोच होना बहुत ज़रूरी है।

छठी कक्षा तक आते-आते बच्चे स्थानीय, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक विविधताओं से परिचित हो जाते हैं। वे हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं के प्रति संवेदनशील भी हो जाते हैं। इस स्तर पर बच्चे की भाषा से जुड़े कौशलों की प्रकृति में गुणात्मक बदलाव आएगा। उनमें स्वतंत्र रूप से पढ़ने की आदत विकसित होगी। पढ़ी हुई सामग्री से वे संज्ञानात्मक और भावनात्मक स्तर पर जुड़ेंगे और उसके बारे में स्वतंत्र और मौलिक विचार व्यक्त कर सकेंगे। यहाँ तक आते-आते लिखना एक प्रक्रिया के रूप में प्रारंभ हो जाता है और वह अपने विचारों को व्यवस्थित ढंग से लिखने लगते हैं।

छठी कक्षा में समझते हुए पढ़ना-लिखना सीख लेने के बाद सातवीं कक्षा में पहुँचकर विद्यार्थी पढ़ते समय किसी रचना से भावात्मक रूप से जुड़ भी सकें और कोई किताब या रचना सामने आने पर उसे उठाकर पलटने और पढ़ने की उत्सुकता उनमें पैदा हो - मु य रूप से यह अपेक्षा रहती है। यह अपेक्षा भी रहती है कि उन्हें इस बात की जानकारी और समझ हो कि समाचार पत्र के विभिन्न पन्नों पर €या छपता है, समाचार पत्र में छपी किसी खबर, लेख या कही गई किसी बात का निहितार्थ €या है ? इस स्तर तक आते-आते विद्यार्थियों के पढ़ने-लिखने में यह बात भी शामिल हो जाए कि विभिन्न उद्देश्यों के लिए पढ़ने और लिखने के तरीकों में अन्तर होता है। हमारे पढ़ने का तरीका इस बात पर भी निर्भर करता है कि हमारे पढ़ने का उद्देश्य □या है। एक विज्ञापन को पढ़ना और एक सूचना को पढ़ने के तरीके में फ़र्क होता है। लेखन के सन्दर्भ में भी यह बात महत्वपूर्ण है कि हमारा पाठक कौन है यानी हम किसके लिए लिख रहे हैं। अगर हमें विद्यालय के खेल-कूद समारोह की सूचना लिखकर लगानी है तो इसके पाठक विद्यालय के बच्चे, शिक्षक और अन्य कर्मचारीगण हैं। लेकिन अगर यही सूचना समुदाय और अभिभावकों को देनी है तो इसके पाठकों में अभिभावक और समुदाय के व्या□त भी शामिल हो जाएँगे। दोनों स्थितियों में हमारे लिखने के तरीके और भाषा में बदलाव आना स्वाभाविक है। विद्यार्थियों से यह अपेक्षा भी रहती है कि वे विभिन्न रचनाओं को पढ़कर उसमें झलकने वाली सोच, पूर्वाग्रह और सरोकार आदि को पहचान पाएँ। कुल मिलाकर प्रयास यह होना चाहिए कि इस चरण के पूरा होने तक शिक्षार्थी किसी भाषा, व्य€त, वस्तु, स्थान, रचना आदि को विश्लेषण करने, उसकी व्या या करने और उस व्या या को आत्मविश्वास व स्पष्टता के साथ अभिव्य€त करने के अ यस्त हो जाएँ। वे रचनात्मक और सृजनात्मक ढंग से भाषा को बरतना सीख जाएँ।

यहाँ यह समझना जरूरी होगा कि हिन्दी भाषा संबंधी जो भाषा-संप्राप्ति के बिन्दु दिए गए हैं उनमें परस्पर जुड़ाव है और एक से अधिक भाषायी क्षमताओं की झलक उनमें मिलती है। किसी रचना को सुनकर अथवा पढ़कर उस पर गहन चर्चा करना, अपनी प्रतिक्रिया व्य□त करना, प्रश्न पूछना पढ़ने की क्षमता से भी जुड़ा है और सुनने-बोलने की क्षमता से भी। प्रतिक्रिया, प्रश्न और टिप्पणी को लिखकर भी अभिव्य□त किया जा सकता है। इस तरह से भाषा की कक्षा में एक साथ सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना जुड़ा है। पाठ्यचर्या संबंधी अपेक्षाओं को पूरा करने में सीखने में उपयु□त प्रक्रियाओं की बड़ी भूमिका होती है। सीखने की उपयु□त प्रक्रियाओं के बगैर सीखने संबंधी अपेक्षित संप्राप्ति नहीं की जा सकेगी। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए यहाँ पाठ्यचर्या संबंधी अपेक्षाएँ, सीखने-सिखाने की प्रक्रिया तथा सीखने संबंधी संप्राप्ति को दर्शाने वाले बिन्दु दिए गए हैं।

शिक्षण स बन्धी प्रक्रियाएं और शिक्षण के परिणाम
कक्षा - छठीं विषय : हिन्दी (तृतीय भाषा)

सभी विद्यार्थियों को (विशेष रूप से सक्षम विद्यार्थियों सहित) विद्यालय के प्रति आकर्षित करने हेतु एकल एक में होना उचित है। और दलगत रूप से भिन्न क्रिया-कलापों के साथ जोड़ते हुए सीखन-शिक्षण की सुविधा प्रदान करने और प्रोत्साहन देने की व्यवस्था लेंगे।

शिक्षण स बन्धी प्रक्रियाएं	शिक्षण के परिणाम
1. वर्ण, ध्वनि, मात्रा आदि के साथ परिचय कराने हेतु चित्रफलक, शZद फलक आदि के सहारे भिन्न कार्यों के साथ जोड़ने का मौका देंगे।	1. स्वर वर्ण, स्वरों की मात्राओं, व्यंजन वर्णों को पहचानेंगे। हिंदी वर्णमाला लिखना तथा पढ़ना सीखेंगे।
2. बाल-गीत, भा□तमूलक गीत, कविता आदि सुनकर बच्चों को एकक या समूह में गाने तथा पाठ करने की सुविधा देंगे।	2. गीत, कविता आदि को उपयु□त उतार-चढ़ाव, गीत, प्रवाह और सही पुट के साथ सुना पायेंगे।
3. दैनन्दिन जीवन में व्यवहृत ख-प श□दों की सहायता से वा□य गठन करने का अवसर देंगे।	3. नए-नए श□द सीखेंगे। साथ ही श□दों के प्रयोग को सीखेंगे। पाठ में आए नए श□दों के अर्थ समझकर वा□य गठन करने की कोशिश करेंगे।
4. भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी बच्चों को हिंदी भाषा में बोलने के लिए पर्याप्त स्वाधीनता और सुविधा देंगे। दृश्य-श्रव्य सामग्री दिखाकर बोलने तथा लिखने का अवसर देंगे।	4. निजी अनुभवों को हिंदी में व्य□त करने की कोशिश करेंगे। साथ ही चित्र, कार्टून आदि देखकर उसके विषय में बोलने तथा लिखने की कोशिश करेंगे।
5. भिन्न रोचक घटना, कहानी, कविता आदि पढ़कर तथा सुनकर बच्चों को उस पर चर्चा करने तथा उस पर आधारित प्रश्न पूछने का अवसर देंगे।	5. तरह-तरह की रचनाओं (कहानी, कविता आदि) को समझकर उस पर आधारित प्रश्न पूछेंगे, अपनी राय देंगे, पूछे गए प्रश्नों के उ□ार मौखिक या लिखित रूप में देंगे।
6. चित्र फलक के सहारे हिंदी सं याओं के साथ परिचय करायेंगे।	6. हिन्दी सं याओं का ज्ञान प्राप्त कर पायेंगे।
7. जातीय साहित्य, संस्कृति, परंपरागत स बन्धी लेखनी पढ़कर उसके विषय में जानने का अवसर प्रदान करेंगे।	7. भारत की अनोखी संस्कृतियों से परिचित होंगें। राष्ट्र-प्रेम, राष्ट्रीय पर्वों, त्योहारों के बारे में ज्ञान प्राप्त करेंगे।
8. आत्मबल तथा आत्मविश्वास से संबंधित कुछ आकर्षक कहानी तथा घटना सुनकर बच्चों में आत्मबल तथा आत्मविश्वास जगाने की कोशिश करेंगे।	8. आत्मबल तथा आत्मविश्वास बढ़ेंगे।
9. पर्यावरण संबंधित चित्रफलक दिखाकर उसे समझने तथा उसके लाभ तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए कार्य करने की प्रेरणा जगायेंगे।	9. पर्यावरण के बारे में जानकारी हासिल कर पायेंगे तथा पर्यावरण संरक्षण हेतु काम कर पायेंगे।
10. अनौपचारिक पत्र लिखने का अवसर देंगे।	10. अनौपचारिक-पत्र के लेखन शैली को सीख पायेंगे।
11. वा□य में विभिन्न चिह्नों के प्रयोग, विराम चिह्नों के प्रयोग आदि को दिखाकर उसे वा□य में प्रयोग करने का अवसर देंगे ।12. लिंग, वचन, क्रिया, समानार्थक श□द, सर्वनाम, विलोम श□द आदि के बारे में ज्ञान देंगे।	11. विभा□त चिह्नों के प्रयोग, विराम चिह्न के प्रयोग आदि का ज्ञान प्राप्त कर पायेंगे। 12. लिंग, वचन, क्रिया, सर्वनाम, समानार्थक श□द, विलोम श□द आदि के बारे में ज्ञान प्राप्त करेंगे।

शिक्षण स बन्धी प्रक्रियाएं और शिक्षण के परिणाम
कक्षा - सातवीं विषय : हिन्दी (तृतीय भाषा)

सभी विद्यार्थियों को (विशेष रूप से सक्षम विद्यार्थियों सहित) विद्यालय के प्रति आकर्षित करने हेतु एकल और दलगत रूप से भिन्न क्रिया-कलापों के साथ जोड़ते हुए सीखन-शिक्षण की सुविधा प्रदान करने और प्रोत्साहन देने की व्यवस्था लेंगे।

शिक्षण स बन्धी प्रक्रियाएं	शिक्षण के परिणाम
1. दैनिक जीवन के भिन्न क्षेत्रों में हिन्दी भाषा को समझने तथा बोलचाल की क्षमताओं का विकास करने हेतु पर्याप्त सुविधा देंगे और ज्यादा-से-ज्यादा हिन्दी भाषा सीखने के लिए उनमें आग्रह उत्पन्न करेंगे।	1. विद्यार्थी नि:संकोच होकर मु□त भाव से हिंदी भाषा में अपना परिचय देंगे और हिंदी में यथासंभव आपस में कथोप कथन करेंगे, अपने मतों को व्य□त करेंगे।!
2. शुद्ध उच्चारण तथा सही लय एवं भंगिमाओं के साथ हिंदी गद्य, कविता आदि का पाठ करेंगे तथा इसके लिए सुविधा प्रदान करेंगे।	2. शुद्ध उच्चारण और सही लय के साथ हिंदी पठन में दक्षता प्राप्त करेंगे।
3. भिन्न गीत, कविताएँ, कहानियाँ, वर्णनमूलक लेख आदि पढ़कर अपनी बातें कहने तथा सवाल पूछने और अपनी भावना या बातें संयोजन हेतु सुविधा प्रदान करेंगे। इसमें प्रयोजनीय दृश्य-श्रव्य शिक्षण सामग्री व्यवहार करेंगे।	3. विद्यार्थी गीत, कविता, कहानी, लेख आदि पढ़कर इस संबंध में चिंतामूलक और सृजनात्मक अपना मत प्रकट करेंगे और उन लेखनियों के ऊपर अपनी चिंता, अनुभव आदि की संयोजनात्मक अभिव्य€त दे सकेंगे।
4. प्रतिष्ठित स्थानीय, राष्ट्रीय कवि, साहित्यिक, महापुरुषों की जीवनी तथा उनकी कर्मराजियों के बारे में विद्यार्थियों को सुनायेंगे।	4. प्रतिष्ठित स्थानीय तथा राष्ट्रीय ऐसे महान व्य□तियों तथा उनके व्य€तत्व के बारे में सुनकर ज्ञान प्राप्त करेंगे और सही समय पर उनकी तरह लेखन के क्षेत्र में स्वयं को काबिल बनाने की चेष्टा करेंगे।
5. विद्यार्थियों को बौद्धिक स्तर के अनुसार विभिन्न विषयों पर लेखन शैली के संबंध में प्रयोग करने की सुविधा देंगे।	5. अपने मानसिक स्तर अनुसार विद्यार्थी विभिन्न विषयों पर लेखन शैली के संबंध में जानेंगे और आवश्यकतानुसार इसे प्रयोग करेंगे
6. विभिन्न विषयों पर श्रुत लेख लिखवाने की व्यवस्था करेंगे।	6. सुनकर, समझकर हिंदी में किसी विषय पर बिना भूल के लिखने को समर्थ हो सकेंगे।
7. किसी भी क्षेत्र तथा विषय पर संबंधित आशुभाषण प्रस्तुति हेतु प्रोत्साहित करेंगे।	7. विद्यार्थी हिंदी में किसी भी विषय पर अपने स्तर और सामर्थ्य के अनुसार अभिव्य□ित देने में सक्षम होंगे।
8. देश-प्रेम और नैतिक मूल्यों की उपयोगिता, विभिन्न राष्ट्रीय स्मारक आदि पर शिक्षक सामग्री सहित विद्यार्थियों को ज्ञान देंगे। एकांकी, नाटक, नु□कड़ नाटक आदि प्रतियोगिता का आयोजन करेंगे।	8. विद्यार्थियों में देश-प्रेम तथा नैतिक मूल्यों पर ज्ञान का विस्तार होगा। राष्ट्रीय स्मारक आदि के दर्शन से वे प्रभावित होंगे। कलात्मक प्रतिभाओं का विकास होगा। अभिनय कर सकेंगे।
9. इले□ट्रॉनिक और प्रिंट माध्यमों के बारे में विद्यार्थियों को बताएंगे तथा इसके लिए उन्हें ये सामग्री दिखाने की व्यवस्था करने के साथ ही विभिन्न समाचार-पत्रों आदि लिए पठन की व्यवस्था करेंगे।	9. इससे विद्यार्थियों को जनसंचार माध्यमों के बारे में ज्ञान प्राप्त होंगे। वे युगीन आवश्यकताओं को समझेंगे और खुद भी प्रभावित होंगे।
10. विद्यार्थियों के श्रेणी स्तर को देखते हुए उन्हें आवश्यकीय व्यावहारिक व्याकरणिक ज्ञान की शिक्षा देंगे।	10. शुद्धता के साथ व्याकरणिक ज्ञान एवं शिक्षा प्राप्त करेंगे और वहीं शुद्धता के साथ हिंदी भाषा का प्रयोग मौखिक तथा लिखित रूप में कर सकेंगे।
11. पत्र लेखन और आवेदन अनुशीलन हेतु शिक्षण की सुविधा देंगे।	11. भिन्न प्रकार के पत्रों के लेखन कला का ज्ञान प्राप्त करेंगे। साथ ही इसके द्वारा विद्यार्थियों की अभिव्य□ित और लेखन शैली के स्तर बढ़ेंगे।
12. भाषा अध्ययन के अंतर्गत लोकोि□त एवं मुहावरों के प्रायोगिक शिक्षा प्रदान की व्यवस्था करेंगे।	12. विभिन्न लोकोि□त एवं मुहावरों, नीति कथाओं के प्रयोग कैसे हों - यह जान पायेंगे और शुद्ध तथा चि□ाकर्षक हिंदी भाषा का प्रयोग कर सकेंगे। दैनिक जीवन और रहन-सहनों में इनकी भूमिका या मह□ा को जान पायेंगे।

शिक्षण स बन्धी प्रक्रियाएं और शिक्षण के पिरणाम
कक्षा - आठवीं विषय : हिन्दी (तृतीय भाषा)

सभी विद्यार्थियों को (विशेष रूप से सक्षम विद्यार्थियों सहित) विद्यालय के प्रति आकर्षित करने हेतु एकल और दलगत रूप से भिन्न क्रिया-कलापों के साथ जोड़ते हुए सीखन-शिक्षण की सुविधा प्रदान करने और प्रोत्साहन देने की व्यवस्था लेंगे।

शिक्षण स बन्धी प्रक्रियाएं	शिक्षण के परिणाम
1. देशप्रेम बढ़ाने के साथ-साथ अपने देश की रक्षा तथा उसकी सांस्कृतिक परंपरा के प्रति जागरूक करने की कोशिश करेंगे।	1. हिंदी की उर्दू शैली में व्यवहार किए जाने वाले कुछ श□दों के प्रयोग का ज्ञान सीखेंगे।
2. भिन्न-भिन्न व्या□तयों की विशिष्ट कथन शैलियों को सुनकर समझ पायेंगे।	2. विश्व प्रसिद्ध व्या□तयों की साधना और विशिष्ट कार्यों की जानकारी से अनुप्रेरित होंगे।
3. विभिन्न प्रकार के पत्र जैसे-पारिवारिक पत्र, आवेदन-पत्र, शिकायती-पत्र आदि लिखने का सामर्थ्य प्राप्त करेंगे।	3. अपने मनोभावों और विचारों को लिख पायेंगे।
4. कहानी, कविता आदि पढ़कर लेखन के विविध तरीकों तथा शैलियों (वर्णनात्मक, भावात्मक आदि) को सीख पायेंगे।	4. कहानी, कविता लेखन में उत्सुकता वृद्धि होगी।
5. पाठ्य वस्तु में प्रयु□त श□दों, मुहावरों, लोकोि□तयों के अर्थ समझते हुए मौखिक/लिखित रूप में व्य□त कर पायेंगे।	5. दैनिक जीवन की सामान्य बातचीत, परिचर्चा आदि को सुनकर समझ पायेंगे।
6. अलग-अलग उद्देश्यों के लिए लिखते हुए अपने लेखन में विराम-चिह्नों, जैसे-पूर्ण विराम, अल्प विराम, प्रश्नवाचक चिह्न का इस्तेमाल सीख सकेंगे।	6. शुद्ध उच्चारण और उपयु€त पठन शैली से पाठ कर पायेंगे।
7. भाषा अध्ययन के अंतर्गत अनुस्वार और अनुनासिक का प्रयोग, समानार्थक श□द, विलोम श□द, ध्वन्यात्मक श□द आदि का ज्ञान प्राप्त करेंगे।	7. व्याकरण स बन्धी ज्ञान प्राप्त करेंगे।
8. भारतीय संगीत की विविध धाराओं के साथ संगीत के क्षेत्र को समृद्ध करने वाले प्रमुख कलाकारों का परिचय प्राप्त करेंगे।	8. गीतों का संग्रह करना, विशिष्ट कलाकारों के चित्र संग्रह करके अलबम बनाना आदि परियोजना कार्यों की योग्यता प्राप्त करेंगे।
9. भारत भ्रमण के दौरान विभिन्न दर्शनीय स्थलों के विषय में जान पायेंगे।	9. भारतवर्ष के विभिन्न स्तंभ, स्मारक निधि आदि के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।
10. बाल-कृष्ण की बाल लीलाओं के वर्णन का ज्ञान प्राप्त करेंगे।	10. प्राचीन कवियों का परिचय प्राप्त करेंगे
11. ब्रह्मपुत्र के जरिए असम की सांस्कृतिक पर परा के प्रति जागरूक करायेंगे।	11. सृजनात्मक लेखन की क्षमता का विकास होगा।
12. अपने परिवेश में मौजूद लोककथाओं और लोकगीतों के बारे में चर्चा करेंगे।	12. गीतों का संग्रह, विशिष्ट कलाकारों के चित्र संग्रह कर सकेंगे।
13. भाषा की बारीकियों, जैसे श□दों के बारीक अंतर, सर्वनाम, विशेषण, कारक, विभि€त आदि के प्रति सचेत रहते हुए लिख पायेंगे।	13. भाषा की बारीकियों पर ध्यान देते हुए अपनी भाषा गढ़ और उसका प्रयोग कर सकेंगे।
14. हिन्दी भाषा की विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार, पत्र-पत्रिका, जानकारीपरक सामग्री, इंटरनेट पर प्रकाशित होने वाली सामग्री आदि) को समझकर मौखिक/लिखित भाषा में अपनी पसंद-नापसंद, राय, टिप्पणी दे पायेंगे।	14. हिन्दी भाषा में विविध प्रकार की रचनाओं को पढ़ पायेंगे।